बाल भारती

२

दो शब्द

यह पुस्तक पंजाब शिक्षा विभाग के नए पाठ्यक्रम के अनुसार सीमित शब्दावली के आधार पर लिखी गई है। प्रत्येक पाठ में थोड़े-थोड़े नए शब्द बढ़ाए गए हैं।

प्रारम्भ में पिछली कक्षा में प्रयुक्त शब्द और वाक्यों की पुनरावृत्ति का ध्यान रखते हुए बालोपयोगी विविध विषयों के पाठ संकलित किए गए हैं। इन पाठों में कहानी या कंठस्थ होने योग्य कविताएं, नाटक, पशु-पक्षी, खेल-कूद, बड़ों के बचपन सम्बन्धी साधारण जानकारी व स्तरानुसार शब्दज्ञान बढ़ाने वाले छोटे-छोटे पाठ हैं। अभ्यास इस ढंग से बनाकर दिए गए हैं कि बच्चों में जिज्ञासा बढ़े और प्रश्नों के उत्तर देने में उनका उत्साह बढ़े, साथ ही उनकी सोचने-विचारने की शक्ति भी बढ़े।

हमारे सामने कल के होनहार नागरिक का चित्र रहा है। हमने यह प्रयत्न किया है कि भाषा अधिक से अधिक सरल और बालकों के ही वातावरण की रहे। वाक्य भी छोटे-छोटे रखे हैं।

इस पुस्तकमाला की रूप-रेखा बनाते समय इसी कक्षा के 'समाज-परिचय' और 'साधारण-विज्ञान' के मौखिक पाठ्यक्रम

हमारे सामने रहे हैं। अनुभव के आधार पर हमारी यह मान्यता रही है कि अन्य विषयों में मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से यदि अच्छी प्रकार से समन्वय किया जा सके तो बालक की अभि-रुचि जागृत करने में पर्याप्त सहायता मिल सकती है । इसलिए हमने यथासम्भव तीनों विषयों में तालमेल बनाए रखने का यत्न किया है ।

हमें आशा है कि बच्चे इस पुस्तक को पढ़कर अच्छे नागरिक बनेंगे ।

—सम्पादक

विषय-सूची

पाठ संख्या		पृष्ठ
१.	सूरज बाबा	१
२.	काम की बातें	३
३.	बुद्धिमान् बालक	६
४.	हमारा गांव	९
५.	सीख रहे हैं लिखना-पढ़ना	१२
६.	पन्द्रह अगस्त	१४
७.	अपना काम अपने हाथ	१६
८.	विजय ने तसवीरें बनाईं	१९
९.	दिवाली	२३
१०.	मोर	२५
११.	अच्छे काम	२७
१२.	कबड्डी	३०
१३.	मेरी गुड़िया	३४
१४.	लीला को इनाम मिला	३६
१५.	नए साथी	३९
१६.	चित्र देखो और बताओ	४२
१७.	सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ	४४

पाठ संख्या पृष्ठ

पाठ संख्या		पृष्ठ
१८.	हाथी	४६
१९.	बैलगाड़ी	४९
२०.	रेलगाड़ी	५२
२१.	बाल दिन	५४
२२.	यह घर मैंने बनाया है	५६
२३.	हम बच्चे हैं	६०
२४.	महात्मा गांधी	६२
२५.	रंग-बिरंगी होली	६५
२६.	दूसरों के लिए	६९
२७.	तारे	७१
२८.	पुलिस का सिपाही	७३
२९.	काम करो	७७
३०.	हँसू अपार	८१
३१.	डाकघर	८३
३२.	एक पत्र	८६
३३.	हमारा गीत	८८
३४.	दिशाएँ	९०
३५.	बच्चों का पार्क	९२
३६.	चिड़ियाघर की सैर	९५
३७.	भारत देश हमारा प्यारा	१००
३८.	हम इनसे सीखें	१०२
३९.	तोता	१०४
४०.	आदमी, चीता और लोमड़ी	१०८
४१.	सात बारों के नाम	११३
४२.	बाल-सभा	११६

पाठ एक

सूरज बाबा

सुबह सवेरे जैसे ही,
सूरज ने आँखें खोलीं,
छोड़ घोंसला, पर फैलाए,
चीं-चीं चिड़ियाँ बोलीं ।

राजू बिस्तर छोड़, बाग में
पहुँच गया तब जल्दी ।
कसरत करने लगा वहाँ
वह, जाकर तरह-तरह की ।
तब खुश हो आशीष दिया
सूरज बाबा ने उसको ।
जुग-जुग जियो, सदा सुख पाओ,
मिले सफलता तुमको ।

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो ।
२. तुम सुबह उठ कर क्या-क्या करते हो ?

पाठ दो

काम की बातें

पाठशाला जाने की तैयारी करो। अपना बस्ता सँभाल लो। देख लो कोई किताब कम तो नहीं है। कापियाँ भी देख लो। पेंसिल, कलम, दवात, स्लेट, एक-एक करके सारी चीजें देख लो। तख्ती साफ है या नहीं। देख लो कलम ठीक बनी हुई है। पेंसिल का सिक्का ठीक है। दवात में स्याही है।

अब शीशे में अपना मुँह देखो। दाँत तो मैले नहीं हैं। देखो तो बालों में ठीक से कंघी हुई है। और जरा अपना चेहरा भी देख लो। नाखून तो कटे हुए हैं। कपड़े तो साफ-सुथरे

हैं न। कमीज और नेकर के बटन देख लो। सब बन्द हैं या नहीं। जूते भी देख लो। उन पर मैल जमी हो तो साफ कर लो। जेब में रूमाल रखना भी मत भूलना।

सड़क के बीचों-बीच मत चलो। सदा बाईं ओर चलो। बीच में कहीं मत रुको। सीधे पाठशाला जाओ। चलते-चलते कुछ नहीं खाना चाहिए। चलते-चलते पढ़ना भी नहीं चाहिए। अपना ध्यान रास्ते पर रखो। चौराहा ध्यान से पार करो। कक्षा में ऊधम मत मचाओ। मन लगा कर पढ़ो। पाठशाला में गन्दगी मत फैलाओ। कक्षा में बैठ कर कुछ मत खाओ। दीवारों पर मत लिखो। आपस में मत लड़ो। बस्ता मैला न करो। हाथ गन्दे न करो। अपनी

किताबें सँभाल कर रखो ।

घर आ गए हो । अपना बस्ता ठीक जगह पर रखो । जूते भी ठीक जगह पर रखो । घर के लिए जो काम मिला हो, उसे करो । गलियों में, सड़क पर या गन्दी जगहों पर मत खेलो । समय पर खाना खाओ । चबा-चबा कर खाओ । रात को जल्दी सो जाओ । सवेरे जल्दी उठो ।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और लिखो——

बस्ता, स्लेट, प्यार, गन्दी, जल्दी, अभ्यास, शब्द ।

२. अपनी किताबों के नाम बताओ ।

३. अपनी पाठशाला का नाम बताओ ।

पाठ तीन

बुद्धिमान् बालक

सौ वर्ष पुरानी बात है।

कलकत्ते के पास मेदनीपुर नाम का एक गाँव है। एक दिन उस गाँव से एक आदमी अपने पुत्र के साथ पैदल कलकत्ते के लिए चला।

सड़क के किनारे पत्थर पर कुछ लिखा हुआ था।

बालक ने पिता से पूछा—पिताजी, इस पत्थर पर क्या लिखा है?

पिता ने बताया—बेटा, यह मील का पत्थर है। इस पर लिखा है—"कलकत्ता १९ मील।" इसका मतलब है—कलकत्ता यहाँ से १९ मील है।

पिता-पुत्र चलते रहे। एक मील चलने पर

उन्हें वैसा ही पत्थर फिर मिल जाता था।
मीलों की गिनती एक-एक करके घटती जाती थी।

बालक इन अंकों को ध्यान से देखता गया।
वह उँगलियों से हवा में लिखता गया।

कलकत्ता पहुँचने से पहले ही बालक को सारे अंग्रेजी अंक लिखना आ गया। उसने पिताजी को एक से दस तक अंग्रेजी अंक लिख कर दिखाए। पिताजी बहुत खुश हुए।

तुम इस बालक का नाम जानना चाहते हो? यह बालक था—ईश्वरचन्द्र। वह बड़ा मेहनती, दयालु और सादा था। वह बड़ा होकर इतना विद्वान् बना कि लोग उसे विद्यासागर कहने लगे। विद्यासागर का मतलब है–बहुत बड़ा विद्वान्। आगे चल कर यही बालक 'ईश्वरचन्द्र विद्यासागर' कहलाया।

अभ्यास

१. ईश्वरचन्द्र ने अंग्रेजी अंक कैसे सीखे ?

२. पढ़ो और लिखो—

ईश्वरचन्द्र, विद्यासागर, बुद्धिमान्, कलकत्ता।

पाठ चार

हमारा गांव

यह हमारा गांव है। गांव में कई घर हैं। कुछ बड़े हैं। कुछ छोटे। कुछ कच्चे हैं। कुछ पक्की ईंटों के। हमारा घर कच्चा है। हमारे

पास दो बैल हैं। एक गाय और एक भैंस है। एक बैल का नाम हीरा है। दूसरे का मोती। गाय का नाम कपिला है। गाय का एक छोटा बछड़ा भी है। मैं उसे बहुत प्यार करता हूं। भैंस को हम कट्टो कहकर पुकारते हैं।

पिताजी बैलों से हल जोतते हैं। रहट चलाने और गाड़ी खींचने का काम भी बैल करते हैं। गाय-भैंस दोनों दूध देती हैं। माताजी दूध दूहती हैं।

हम सब दूध, दही, लस्सी और मक्खन खाते हैं। मैं खेतों की रखवाली करने में पिताजी की सहायता करता हूँ। पशुओं को चारा-पानी देने में भी मदद करता हूँ। हम अपने पशुओं से बहुत प्यार करते हैं। उनकी भूख-प्यास का ध्यान रखते हैं। हम अपने पशुओं को कभी नहीं मारते। उनकी जगह को साफ-सुथरा रखते हैं।

हमारा गांव बहुत साफ-सुथरा है। गांव के सभी लोग गांव की सफाई का ध्यान रखते हैं। कुएं के पानी की सफाई का, गलियों की सफाई का सभी ध्यान रखते हैं।

गांव में बहुत से घर किसानों के हैं। कुछ

घर दूसरे काम-धन्धे करने वालों के भी हैं। जुलाहा गांव के लोगों के लिए कपड़ा बनाता है। कुम्हार मिट्टी के बर्तन और लुहार खेती-बाड़ी के औज़ार। बढ़ई लकड़ी का काम करता है। चमार जूते बनाता है।

एक छोटी-सी दुकान भी है। इसमें ज़रूरत की सभी चीज़ें मिल जाती हैं।

गांव में एक पाठशाला भी है। गांव के सभी बच्चे पाठशाला में पढ़ने जाते हैं। हम अपने अध्यापक जी का कहा मानते हैं।

अभ्यास

१. किसान क्या काम करते हैं ?

२. किसान बैलों से क्या-क्या काम लेता है ?

३. गांव में कौन-कौन लोग रहते हैं ?

४. अपने गांव और ज़िले का नाम बताओ।

५. तुम घर का क्या-क्या काम करते हो ?

पाठ पांच

सीख रहे हैं लिखना-पढ़ना

चुन्नू, मुन्नी, चम्पा, भोला,
कंधों से लटकाए झोला।
साथ-साथ चलते हैं ऐसे,
मानो लिए पालकी जैसे।

दूर गाँव से पढ़ने आते,
चलते-चलते थक-थक जाते।
पर किसान के बालक हैं ये,
रुकते नहीं, नहीं घबराते।
चाहें चाहें आगे बढ़ना,
उन्नति की चोटी पर चढ़ना।
इसीलिए वे बड़े प्रेम से
सीख रहे हैं लिखना-पढ़ना।

अभ्यास

१. बच्चे लिखना-पढ़ना किस लिए सीखते हैं ?
२. इस कविता को याद करो।

पाठ छः

पन्द्रह अगस्त

आज पन्द्रह अगस्त है ।

यह हमारी आजादी का त्यौहार है ।

सब मैदान में जा रहे हैं ।

विजय भी जाना चाहता है । माँ ने उसे नए कपड़े पहना कर तैयार कर दिया । वह बढ़िया रंग-बिरंगी कमीज, नेकर, पाँवों में जुराबें और जूते पहन कर चला ।

विजय बहुत खुश है ।

वह मैदान में जाएगा । वहाँ आज स्कूलों के हजारों बच्चे जमा हुए हैं । वे झण्डे को सलामी देंगे ।

आज तिरंगा झण्डा फहराया जाएगा ।

तिरंगा हमारे देश का झण्डा है ।

राज्यपाल ने झण्डा फहराया। फिर झण्डे को सिर झुकाया। इसके बाद लोगों को अच्छे-अच्छे काम करने के लिए कहा। बाद में उन्होंने कहा—जय हिन्द !

और सभी लोगों ने कहा—जय हिन्द !

जय हिन्द ! के नारों से मैदान गूँज उठा।

अभ्यास

१. पन्द्रह अगस्त कैसा त्यौहार है ?

२. तिरंगा किसने फहराया ?

३. खाली स्थानों में शब्द भरो—

(क) तिरंगा——देश का झंडा है।

(ख) फिर झंडे को——झुकाया।

पाठ सात

अपना काम अपने हाथ

मेरे पास एक टीन का डिब्बा है। मैं इस में अपनी चीजें रखती हूँ। इसमें मैंने सूई-

धागा रखा है। बुनने की सलाइयाँ रखी हैं। ऊन की गुच्छी रखी है। कुछ रंग-बिरंगे धागे

रखे हैं। थोड़ा-सा कपड़ा भी है। कुछ बटन भी हैं।

मैं सीना सीखती हूँ। सलाइयों से बुनना सीखती हूँ। मैं बटन लगा लेती हूँ। मैं गुड़िया के लिए कपड़े बनाना सीखती हूँ। मुझे अपने हाथ से काम करना बहुत अच्छा लगता है। मैं अपना काम अपने हाथ से करना चाहती हूँ।

माताजी मुझे सीना सिखाती हैं। एक दिन मैंने माताजी से कहा—माताजी, मेरे लिए एक बटुआ बना दीजिए।

माताजी ने कहा—बेटी, मैं तुझे बटुआ बनाना सिखा दूँगी। तुम अपना बटुआ अपने हाथ से बनाना।

माताजी ने कपड़ा लेकर बटुआ काट दिया। मैं पास बैठी देखती रही। माताजी मुझे समझाती रहीं। फिर उन्होंने मुझे बटुआ सीना

समझाया। मैंने अपना बटुआ अपने आप सिया।

बटुआ बहुत अच्छा नहीं बना। पर मैं खुश हूँ। यह काम मैंने किया है। यह मेरा सिलाई का पहला काम है।

अभ्यास

१. बटुआ अच्छा नहीं सिला था, फिर भी सीने वाली लड़की क्यों खुश थी ?

२. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो—

(क) यह काम······किया है।

(ख) मैं·······कपड़े बनाना सीखती हूँ।

(ग) मुझे·······काम करना बहुत अच्छा लगता है।

पाठ आठ

विजय ने तसवीरें बनाईं

विजय को तसवीर बनाने का शौक है। उसके मामा ने उसे रंगों का एक डिब्बा दिया है। इसमें सभी रंग हैं। पीला, लाल, नीला,

हरा, काला। और भी कई रंग हैं।

विजय ने हरे रंग से सूरज की तसवीर

बनाई। उसने चाँद में पीला और लाल रंग मिला कर भरा। उसने नीले रंग से एक पौधा बनाया। विजय बहुत खुश था। उसने तीन

तसवीरें बनाई थीं।

उसने माँ को पुकारा—माँ, माँ, देखो, मैंने कितनी अच्छी तसवीरें बनाई हैं।

माँ रसोई में काम कर रही थी। उसने कहा—जरा ठहर कर देखूँगी। तब तक तुम्हारे पिताजी भी आ जाएँगे। उन्हें भी दिखाना।

शाम को जब सब खाना खा चुके तो विजय अपनी तसवीरों की कापी उठा लाया। वह मन ही मन सोच रहा था—पिताजी इन्हें देख कर बहुत खुश होंगे। फिर कल मैं इनसे भी बढ़िया तसवीरें बनाऊँगा।

पिताजी ने तसवीरें देखीं। वे बहुत खुश हुए। तसवीरें अच्छी बनी थीं। उन्होंने विजय की पीठ थपथपाई।

उन्होंने कहा—विजय, तुमने तसवीरें तो अच्छी बनाई हैं। पर रंग भरने में कुछ भूलें भी की हैं। कोई बात नहीं। अभी तो तुम सीख ही रहे हो। अब जो तसवीरें बनाओ, उनमें ये भूलें नहीं होनी चाहिएँ। अच्छा, पहले यह बताओ—उगते हुए सूरज का रंग कैसा होता है?

विजय ने कहा—लाल।

पिताजी—इसलिए उगते हुए सूरज की

पाठ नौ

दिवाली

आती है हर साल दिवाली
लाती है संग में खुशहाली
सभी मगन इस दिन दिख पड़ते।
नए-नए कपड़े हैं बनते ॥

घर-घर होती खूब सफाई ।
अच्छी-अच्छी बने मिठाई ॥
घर-घर देखो दीपक जलते ।
दूर-पास से सुन्दर लगते ॥
ऊपर हँसते झिलमिल तारे ।
नीचे हँसते दीपक सारे ॥
फुलझड़ियाँ जलती हैं झटपट ।
छुटें पटाखे पट-पट पट-पट ॥
रोज रहे ऐसी दीवाली ।
रोज मनाएँ सब खुशहाली ॥
सबने मिल कर दीप जलाए ।
घर, आँगन, छत, द्वार सजाए ॥

अभ्यास

१. बताओ, दिवाली कैसे मनाई जाती है ?
२. इस कविता को याद करो ।

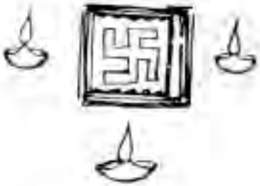

पाठ दस

मोर

मोर बहुत सुन्दर पक्षी है। जरा इसके पंख तो देखो। कैसे रंग-बिरंगे हैं। सिर पर कलगी लगी है। इसकी पूँछ खूब लम्बी है।

जब आसमान में बादल छाए हों, तब मोर नाचने लगता है। नाचते समय मोर अपनी पूँछ को खड़ा करके फैला देता है। उसका एक-

एक पंख फैल जाता है। नाचता हुआ मोर बड़ा सुन्दर लगता है।

मोर जल्दी ही पालतू हो जाता है। यह अनाज, कीड़े-मकोड़े खाता है।

मोर की पूँछ भारी और लम्बी होती है। इसलिए मोर अधिक नहीं उड़ सकता। वह एक डाल से उड़ कर दूसरी डाल पर जा बैठता है। वह लम्बी उड़ान नहीं उड़ सकता।

मोर आदमी से बहुत कम डरता है। तुम चिड़ियाघर में मोर को देख सकते हो।

अभ्यास

१. मोर कब नाचता है ?
२. मोर क्या खाता है ?
३. मोर की पूंछ लम्बी होती है या छोटी ?

पाठ ग्यारह

अच्छे काम

क्या तुम यह समझते हो कि तुम छोटे बच्चे हो, इसलिए दूसरों की सेवा नहीं कर सकते ? तुम सेवा के कई काम कर सकते हो।

१. कोई रास्ता पूछे और तुम्हें मालूम हो तो उसे रास्ता बता दो।

२. कोई अंधा सड़क पार करना चाहता हो तो उसका हाथ पकड़ कर सड़क पार करवा दो।

३. किसी ने सड़क पर केले के छिलके फेंक दिए हों तो उन्हें हटा दो।

४. राह चलते किसी के हाथ से कोई चीज गिर पड़े तो उठा कर उसे दे दो।

५. अगर तुम बस में बैठे हो और कोई बूढ़ा, बीमार या लँगड़ा आ जाए तो उठ कर खड़े हो जाओ। अपनी जगह उसे बैठने दो।

६. रास्ते में चलते समय तुम्हारा कोई साथी या कोई छोटा बच्चा फिसल कर गिर पड़े तो

उसे उठने में सहायता दो। गिर कर उसकी चीजें बिखर गई हों, तो उन्हें इकट्ठा करने में सहायता करो।

अभ्यास

१. सड़क पर केले के छिलके पड़े हैं, तुम क्या करोगे ?

२. कोई अंधा सड़क पार करना चाहता है, तुम क्या करोगे ?

पाठ बारह

कबड्डी

कबड्डी तुम रोज खेलते हो। यह खेल हमारे देश में सभी जगह खेला जाता है। कबड्डी का खेल कई तरह से खेला जाता है। यहाँ हम तीन तरह की कबड्डी के बारे में तुम्हें बताएँगे।

इस खेल में प्रायः नौ-नौ खिलाड़ियों की दो टोलियाँ होती हैं। दोनों टोलियाँ मैदान में

आमने-सामने खड़ी होती हैं। बीच में एक लकीर खींच कर मैदान को दो भागों में बाँट दिया जाता है। एक भाग एक टोली का और दूसरा दूसरी का।

खेल शुरू होने पर एक टोली का एक खिलाड़ी 'कबड्डी-कबड्डी' कहता हुआ, दूसरी टोली के भाग में जाता है। वह कोशिश करता है कि दूसरी टोली के किसी खिलाड़ी को हाथ या पाँव से छूकर, अपने भाग में लौट आए। यह काम उसे एक ही साँस में करना होता है।

दूसरी टोली वाले कोशिश करते हैं कि उसे पकड़ लें। जब कोई खिलाड़ी पकड़ लिया जाता है तो उसे 'मरा' हुआ समझ लिया जाता है। अगर वह किसी को छूकर अपनी टोली में लौट आता है तो, जिसे छुआ हो, वह 'मरा' हुआ मान लिया जाता है। मरे हुए खिलाड़ी

एक तरफ बैठ जाते हैं। इसमें एक बार मरा हुआ खिलाड़ी दुबारा उस पारी में नहीं खेल सकता। एक टोली दूसरी टोली के खिलाड़ियों को अधिक से अधिक संख्या में मारने की कोशिश करती है। जिस टोली के सारे खिलाड़ी पहले मर जाते हैं, उसकी हार मानी जाती है।

दूसरी तरह की कबड्डी में मरा हुआ खिलाड़ी, दूसरी टोली के खिलाड़ी के मरने पर जी उठता है और दुबारा खेलने लगता है।

तीसरी तरह की कबड्डी में मरने पर भी खिलाड़ी बैठता नहीं है। खेलता रहता है। हाँ, किस टोली में कितने मरे, इसका हिसाब रखा जाता है और निश्चित समय तक, जिस टोली के ज्यादा खिलाड़ी मरे हों, उसकी हार होती है।

अभ्यास

१. इनमें से तुम किस तरह की कबड्डी खेलते हो ?

२. कबड्डी के इलावा तुम और कौन-कौनसि खेल खेलते हो ?

३. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताओ–

अधिक, संख्या, खिलाड़ी, टोली ।

पाठ तेरह

मेरी गुड़िया

मैं अपनी प्यारी गुड़िया को
अच्छी तरह सजाऊँगी।
मैं अपनी गुड़िया को—
दुनिया भर की सैर कराऊँगी।

बाग - बगीचे, हाट - बाट—
बाजार इसे दिखलाऊँगी।

मैं अपनी गुड़िया को–
अपने साथ स्कूल ले जाऊँगी।
जो कुछ पढ़ूँ-लिखूँगी–
वह सब इसको भी सिखलाऊँगी।
अच्छी स्वयं बनूँगी मैं–
और अच्छी इसे बनाऊँगी।

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो।

पाठ चौदह

लीला को इनाम मिला

एक बूढ़ा आदमी था। वह लाठी टेकता-टेकता सड़क पर चला जा रहा था। एकाएक तेज हवा चलने लगी। तेज हवा से धूल उड़ने लगी। फिर जोर से आँधी आई। आँधी में बूढ़े की टोपी उड़ गई।

उधर से दो लड़के पाठशाला जा रहे थे। बूढ़े ने उनसे कहा—प्यारे बच्चो, जरा दौड़ कर मेरी टोपी तो पकड़ लो।

लड़कों ने बूढ़े की बात पर ध्यान नहीं दिया। सुनी अनसुनी कर दी। टोपी हवा में इधर-उधर उड़ रही थी। टोपी को उड़ता देख कर वे लड़के हँसने लगे।

उनके पीछे एक लड़की आ रही थी। वह भी उसी पाठशाला में पढ़ने जा रही थी।

उसका नाम लीला था। लीला ने भी बूढ़े की बात सुन ली। उसने झटपट दौड़ कर टोपी

पकड़ ली। रूमाल से उसको साफ किया। फिर आदर के साथ उस बूढ़े को दे दी।

सामने पाठशाला थी। दोनों लड़के पाठशाला में पहुँच गए। लीला भी पाठशाला में पहुँची। पाठशाला के बरामदे में अध्यापक

जी खड़े थे। वे यह सब देख रहे थे।

दिन भर पढ़ाई-लिखाई होती रही। छुट्टी से पहले अध्यापक जी ने सब विद्यार्थियों को इकट्ठा किया। सबको बूढ़े की टोपी की बात बताई। लीला के इस अच्छे काम की उन्होंने बहुत बड़ाई की।

अध्यापक जी ने लीला को एक पुस्तक इनाम में दी। उस पुस्तक में बहुत-से चित्र थे। उन्होंने पुस्तक पर लिखा—'अच्छी लीला को, अच्छा काम करने का इनाम।'

सभी ने लीला के अच्छे काम की बड़ाई की।

अभ्यास

१. बताओ, लीला ने कौन-सा अच्छा काम किया ?

२. अध्यापक जी ने लीला को पुस्तक इनाम क्यों दी ?

३. अपने किये किसी अच्छे काम का वर्णन करो।

पाठ पन्द्रह

नए साथी

ये मेरे पाठशाला के साथी हैं । ये पाठशाला जाते समय रास्ते में मिल जाते हैं । हम एक दूसरे को 'नमस्ते' करते हैं । 'जी' कह कर पुकारते हैं । हम पाठशाला में मिल कर भजन गाते हैं । मिल कर पढ़ते-लिखते हैं । मिल कर पहाड़े याद करते हैं ।

आधी छुट्टी में एक जगह बैठ कर खाते-पीते हैं । इकट्ठे खेलते हैं ।

मेरे साथी बहुत अच्छे हैं । हम एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते नहीं । कोई किसी की चुगली नहीं करता । हम कक्षा में शोर नहीं मचाते । मन लगा कर पढ़ते हैं । हम सभी अध्यापक जी का आदर करते हैं । उनका कहना मानते हैं ।

हमारा एक साथी बहुत अच्छा गाता है। उसका नाम विमल है।

एक दिन खेलते-खेलते मेरे पैर में चोट लग गई। सब साथी दौड़े-दौड़े मेरे पास आए। एक साथी ने अपना रूमाल निकाल कर पट्टी बाँध दी। दूसरा मेरे लिए दौड़ कर पानी ले आया।

एक दिन हमारे साथी रमेश का जन्म-दिन था। उसने हमें अपने घर बुलाया था।

सभी ने वहाँ मिठाई खाई और चाय पी। मैं भी अपने जन्म-दिन पर साथियों को घर बुलाऊँगा।

अभ्यास

१. अपने स्कूल के साथियों के नाम बताओ।

२. तुम पाठशाला में क्या-क्या करते हो ?

३. इन शब्दों के अर्थ लिखो–

केवल, आदर, कक्षा, अध्यापक।

पाठ सोलह

चित्र देखो और बताओ

सामने के चित्र को ध्यान से देखो और बताओ–

१. वृक्ष पर कौन-सा पक्षी बैठा है ?

२. उसकी चोंच में क्या है ? (रोटी का टुकड़ा)

३. जमीन पर कौन बैठा है ?

४. लोमड़ी क्या देख रही है ?

५. वह क्या चाहती है ?

६. वह कौए को क्या कह रही है ? (गीत गाने के लिए)

७. जब कौए ने गाना शुरू किया तो क्या हुआ ?

८. तब लोमड़ी ने क्या किया ?

लोमड़ी और कौआ

पाठ सत्रह

सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ

देखो क्या कहती हैं कलियाँ
हर दम हँसो और मुसकाओ
बने रहो तुम सब के प्यारे
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ।

देखो क्या कहती हैं नदियाँ–
हर दम आगे बढ़ते जाओ,

खेत, गाँव, वन, पेड़, घास से
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ।
देखो क्या कहते हैं पौधे
हर-दम ऊँचे उठते जाओ,
हरा-भरा मन रक्खो अपना
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ।
देखो क्या कहता है दीपक
अंधकार से मत घबराओ,
जब तक दम में दम बाकी है,
सुन्दर पास-पड़ोस बनाओ।

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो।
२. कलियों और पौधों से तुम्हें क्या सीख मिलती है ?

पाठ अठारह

हाथी

काला रंग, जमीन तक लटकती सूँड। खम्भों जैसी टाँगें, बाहर निकले हुए दो बड़े दाँत। छोटी-छोटी आँखें और पंखे जैसे कान। पहचानो तो यह कौन-सा जानवर है? यह हाथी है। यह जंगल का सबसे बड़ा जानवर है।

यह जंगल का जानवर है। यह पालतू भी बन जाता है। पालतू हाथी कई काम करते हैं।

हाथी पर सवारी करते हैं। चिड़ियाघर में

तुम भी हाथी की सवारी कर सकते हो। पहले हाथी पर बैठ कर लड़ाई भी लड़ते थे।

तुमने कभी सरकस देखा है ? सरकस में हाथी कई तरह के खेल दिखाता है। नई दिल्ली के चिड़ियाघर में एक हाथी है। वह सूँड उठा कर 'नमस्ते' करता है। फूलों की माला गले में पहनाता है।

हाथियों को नदी में नहाना बहुत अच्छा लगता है। हाथी अपनी सूँड में पानी भर कर पिचकारी की तरह फेंकता है। जैसे तुम होली में रंग की पिचकारी छोड़ते हो। हाथी के लम्बे दाँत बाहर निकले रहते हैं। उनसे वह चबाने का काम नहीं लेता। चबाने वाले दाँत मुँह के भीतर होते हैं। तभी तो कहते हैं—

हाथी के दाँत
दिखाने के और
खाने के और

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो—

(क) यह जंगल का·····बड़ा जानवर है।

(ख) चबाने वाले·····मुंह के भीतर होते हैं।

(ग) हाथी के दाँत

·····के और

·····के और

२. हाथी के कान कैसे होते हैं ?

३. सरकस में हाथी क्या करता है ?

४. तुम हाथी की सवारी कहाँ कर सकते हो ?

पाठ उन्नीस

बैलगाड़ी

इस चित्र को देखो। इसमें एक बैलगाड़ी है। उसमें दो बैल जुते हैं। इन बैलों को देखो।

कितने सुन्दर हैं। तगड़े भी खूब हैं। इनके सींगों को देखो। कैसे गोल और नुकीले हैं। इनकी पूंछें जमीन तक लम्बी हैं। गाड़ीवान ने इनके गले में घंटियाँ बाँध रखी हैं। बैल

चलते रहते हैं, घंटियाँ टुनुन-टुनुन बजती रहती हैं।

बैलगाड़ी के पहिये लकड़ी के हैं। ये पहिये बहुत भारी हैं। यह भारी बोझा ढोने के काम आती है। किसान अपनी फसल गाड़ी पर लाद कर शहर में बेचने ले जाते हैं।

चित्र में देखो। गाड़ी पर अनाज की बोरियाँ लदी हैं। अनाज गाँव वालों ने पैदा किया है। गाँवों के लोग खेती का काम करते हैं।

गाँव के लोग बड़े भले और मेहनती होते हैं। वे अपनी मेहनत से गेहूँ, चावल, मक्की, दालें, गन्ना और कपास पैदा करते हैं। यह अनाज शहर में बेचा जाता है। इस अनाज के बदले किसान को रुपया मिलता है। उससे किसान ऐसी चीजें खरीदता है, जो गाँव में नहीं मिलतीं।

मोटर के लिए बढ़िया सड़क चाहिए। रेल

के लिए लोहे की पटरियाँ चाहिए। पर बैल-गाड़ी ऊबड़-खाबड़ सड़क पर भी चल सकती है। गाँव वालों के लिए बैलगाड़ी बड़े काम की चीज है।

अभ्यास

१. बैलगाड़ी के इलावा हम किस पर चढ़ कर आ-जा सकते हैं ?

२. खाली जगह में शब्द भरो——

यह अनाज गाँव वालों ने·····किया है।

मोटर के लिए बढ़िया·····चाहिए।

रेल के लिए·····की पटरी चाहिए।

पाठ बीस

रेलगाड़ी

आओ, तुमको खेल खिलाएँ।
आओ, मिल कर रेल चलाएँ॥

राम, रमेश, सुशीला आओ,
कमला, चुन्नी, मुन्नी आओ।

एक एक के पीछे होकर,
डिब्बे बन कर सब जुड़ जाओ॥

सोहन गार्ड बनो तुम पीछे,
हरी-हरी झंडी दिखलाओ ।
मोहन तुम इंजन बन जाओ,
सीटी देकर रेल चलाओ ॥
प्लेटफार्म आया रुक जाओ,
कुली बुला सामान उठाओ ।
सभी मुसाफिर टिकट दिखाओ,
तब ही बाहर जाने पाओ ॥

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो ।
२. गार्ड क्या काम करता है ?
३. बताओ इंजन सीटी क्यों बजाता है ?
४. इस कविता में बताए ढंग से रेलगाड़ी का खेल खेलो ।

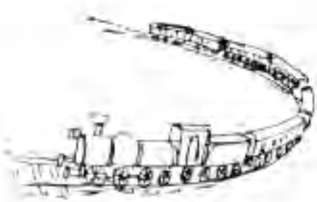

पाठ इक्कीस

बाल दिन

आज बाल दिन है। बाल दिन पर सब स्कूलों में छुट्टी रहती है। स्कूलों में बाल सभाएँ होती हैं। बच्चों के खेल होते हैं। बच्चे कविताएँ सुनाते हैं। बच्चे कहानियाँ सुनाते हैं।

बाल दिन हर साल चौदह नवम्बर को मनाया जाता है। चौदह नवम्बर चाचा नेहरू का जन्म-दिन है। चाचा नेहरू अपने जन्म-दिन को बच्चों के बीच मनाते हैं।

चाचा नेहरू नई दिल्ली में रहते हैं। बाल दिन पर बहुत से बच्चे चाचा नेहरू के यहाँ जाते हैं। सबके हाथों में फूलों की मालाएँ होती हैं। बच्चे बारी-बारी से चाचा नेहरू को फूलों की मालाएँ पहनाते हैं। चाचा नेहरू भी बच्चों को मालाएँ पहनाते हैं। गुलाब के फूल

देते हैं। गुलाब के फूल उन्हें बहुत पसन्द हैं।

चाचा नेहरू बच्चों के साथ खेलते भी हैं। अपने जन्म-दिन की खुशी में उनको मिठाइयाँ खिलाते हैं। फिर बच्चे उनके साथ फोटो भी खिंचवाते हैं।

बाल दिन की डाक टिकटें भी निकल चुकी हैं। चाचा नेहरू को देश भर के बच्चे प्यारे हैं। सारे देश के बच्चे नेहरू जी को प्यार करते हैं। इसी से सब बच्चे उनको चाचा नेहरू कहते हैं।

अभ्यास

१. चाचा नेहरू किस तारीख को पैदा हुए हैं ?

२. बताओ, बाल दिन कब और क्यों होता है ?

पाठ बाईस

यह घर मैंने बनाया है

विजय को दियासलाई की खाली डिबिया मिली। उसने बाहर का खोल फेंक दिया। अंदर की डिबिया के तले को तोड़ कर एक चौखटा-सा उसके हाथों में रह गया। बस, यह उसके

काम की चीज है। वह इसे नहीं तोड़ेगा। यह ईंटें बनाने का साँचा है। वह ईंटें बनाएगा।

उन्हें सुखाएगा और फिर एक घर बनाएगा। और उसने बहुत-सी ईंटें बना कर सुखा लीं। अब वह चिनाई शुरू करेगा।

वह ईंटों को चिनता गया। दीवार कुछ ऊँची उठी तो उसने खिड़कियों के लिए जगह खाली छोड़ दी। सामने दरवाजा रखा। एक तरफ रसोई घर बनाया। रसोई घर में धुआँ निकलने के लिए चिमनी बनाई। फिर घर के चारों तरफ दीवाल बना दी। एक जगह फाटक बनाया। आँगन में छोटी-छोटी क्यारियाँ बना दीं।

फिर उसने फाटक पर लिख दिया—"भीतर जाना मना है।" और वह खिलखिला कर हँस पड़ा। सच बात तो यह है कि इस घर के भीतर कोई भी नहीं जा सकता। विजय भी नहीं जा सकता। यह घर इतना छोटा है कि इसमें बिल्ली भी नहीं घुस सकती। हाँ, चूहा

इसके भीतर जा सकता है ।

विजय के मित्र उससे पूछते हैं—विजय भाई, हम तो भीतर जा नहीं सकते । आप ही बता दीजिए कि आपने घर के भीतर क्या-क्या बनाया है ।

विजय उन्हें बताता है—मित्रो ! इसमें तीन कमरे हैं । एक सामान रखने के लिए, दूसरा सोने के लिए और तीसरी बैठक है । किताबें और दूसरी चीजें रखने के लिए अलमारियाँ हैं । कपड़े टाँगने के लिए खूँटियाँ हैं । जूते रखने के लिए अलग जगह है । नहाने के लिए स्नान घर है । उधर कोने में पाखाना है ।

इस घर में एक कमी है । इसमें कुत्ता नहीं है । मैं एक अच्छा-सा कुत्ता लाऊँगा । उसे फाटक पर बाँधूँगा । वह इस घर की रखवाली किया करेगा । किसी को भीतर नहीं घुसने देगा ।

उसके मित्र उसकी बातें सुन कर हँस पड़े।

विजय के घर कोई आता है तो वह उसे अपना घर दिखाना नहीं भूलता है। और कहता है—देखिए, यह घर मैंने बनाया है।

अभ्यास

१. अपने घर के बारे में दस पंक्तियाँ लिखो।
२. विजय के घर के भीतर कोई क्यों नहीं जा सकता?
३. तुम भी विजय की तरह छोटा-सा घर बनाओ।
४. लोग कुत्ता क्यों पालते हैं।

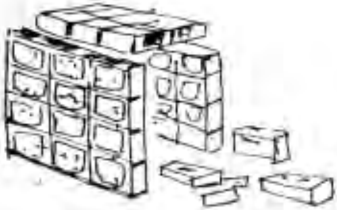

पाठ तेईस

हम बच्चे हैं

हम छोटे-छोटे बच्चे हैं ।
हम फकफक रेल चलाते हैं ।
हम ढमढम ढोल बजाते हैं ।
हम बच्चे हैं पर सच्चे हैं ।
हम छोटे-छोटे बच्चे हैं ।

घोड़ा तिक-तिक हमीं चलाते ।
चन्दा मामा हमीं बुलाते ।
हम अच्छे-अच्छे बच्चे हैं ।
हम छोटे-छोटे बच्चे हैं ।
हम पढ़ते हैं, हम लिखते हैं ।
हम हँसते और हँसाते हैं ।
हम हिन्द के अच्छे बच्चे हैं ।
हम बच्चे हैं, पर सच्चे हैं ।

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो ।
२. इस कविता में बताए खेल खेलो ।

पाठ चौबीस

महात्मा गांधी

विजय—अध्यापक जी, यह किनका चित्र है ?

अध्यापक—यह महात्मा गांधी का चित्र है।

विजय—महात्मा गांधी कौन थे ?

अध्यापक—महात्मा गांधी हमारे देश के सबसे बड़े नेता थे। महात्मा गांधी ने ही हमारे देश को आजाद कराया। उन्हें सभी आदर से बापू कहते हैं।

विजय—अध्यापक जी, उन्हें बापू क्यों कहते हैं ?

अध्यापक—इसलिए कि वे हम सबके पिता के समान थे। वे सबको अपने बच्चों की तरह प्यार करते थे।

विजय—चाचा नेहरू बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। क्या बापू भी बच्चों को प्यार करते थे?

अध्यापक—महात्मा गांधी जी बच्चों को बहुत प्यार करते थे। वे बच्चों को अपने साथ घुमाने भी ले जाते थे।

विजय—अध्यापक जी, बापू ने यह घड़ी कमर में क्यों लटका रखी है?

अध्यापक—बापू को यह जेब घड़ी एक अंग्रेज ने आदर से भेंट की थी। बापू कमीज, कुरता या कोट तो पहनते नहीं थे जो जेब में घड़ी रख सकते। इसीलिए कमर में ही घड़ी लटकाते थे।

विजय—क्या बापू अपना हर काम अपने आप करते थे?

अध्यापक—क्यों नहीं? वे अपने सभी काम अपने आप ही करते थे। बापू को दूसरों की सेवा करने में बड़ा आनन्द आता था। वे सदा

सच बोलते थे। किसी से डरते नहीं थे। बापू के बारे में तुम आगे की कक्षाओं में और बहुत सी बातें पढ़ोगे।

विजय—अध्यापक जी, हम बच्चे भी सदा सच बोलेंगे। हम भी अपने सब काम ठीक समय पर किया करेंगे।

अभ्यास

१. बापू अपनी घड़ी कहाँ रखते थे ?

२. तसवीर देख कर बताओ, बापू जी क्या पहनते थे।

३. बापू का नाम बताओ।

पाठ पच्चीस

रंग-बिरंगी होली है

होली का त्योहार है। दो दिन की छुट्टियाँ हैं। मौसम भी बहुत अच्छा है। न गर्मी है, न सर्दी। बसन्त का मौसम बहुत अच्छा होता है। बाग-बगीचों में रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। रंग-बिरंगे फूलों पर रंग-बिरंगी तितलियाँ उड़

रही हैं। दिन पहले से बड़े हो गए हैं।

आज होली है। रेखा सबसे पहले होली खेलने के लिए तैयार हो गई। पिताजी ने कहा—अभी नहीं। धूप निकलने पर होली खेलनी चाहिए।

दस बज गए। गली-मुहल्ले में, बाजारों में खूब शोर मचा है। लोग टोलियाँ बना कर होली खेलने निकले हैं।

रेखा ने हाथों में रंग मला। चुपचाप गई और विजय का मुँह रँग दिया। रेखा ने पहल की थी। वह बहुत खुश थी।

अब विजय की बारी थी। उसने पिचकारी में रंग भरा और पिताजी को रँग दिया। इस पर रेखा और विजय की माँ खूब हँसीं।

इतने में पड़ोस के बच्चे होली खेलने आ गए। विजय और रेखा ने उन पर रंग डाला। फिर आपस में गले मिले। सबने

एक दूसरे पर रंग डाला।

विजय भी टोली के साथ चल पड़ा। माँ ने कहा—अरे, जरा ठहरो। आज त्योहार का दिन है। अपने साथियों का मुँह मीठा कराओ। अन्दर अलमारी में लड्डू रखे हैं। सबको एक-एक लड्डू दो। विजय ने हाथ धोकर सब साथियों को लड्डू बाँटे।

अब वे बाजार में निकले। सब ने कहा—'होली है, होली है, रंग-बिरंगी होली है!' और राह चलते लोगों पर रंग डालने लगे। वे बड़ी देर तक होली खेलते रहे।

दोपहर को लौटे। नहा-धोकर खाना खाया। आज माँ ने कई पकवान पकाए थे। बाजार से मिठाई भी मँगवाई थी। सब ने जी भर कर खाया। और रात को दादी ने होली की कहानी सुनाई।

अभ्यास

१. अध्यापक जी से होली की कहानी पूछो।

२. नीचे लिखे वाक्यों में, जहाँ दो शब्द हैं, उचित शब्द रहने दो। दूसरा शब्द काट दो।

(क) बागों में रंग-बिरंगे फल / फूल खिले हैं।

(ख) सबने एक दूसरे पर पानी / रंग डाला।

पाठ छब्बीस

दूसरों के लिए

एक बूढ़ा आदमी था। वह सड़क के किनारे

आम का पेड़ लगा रहा था। एक आदमी ने कहा—अरे बूढ़े बाबा, तुम यह पेड़ क्यों लगा रहे हो ! यह तुम्हारे किस काम आएगा ?

बूढ़े ने कहा—मेरे काम नहीं आएगा, दूसरों के काम तो आएगा। मैं इसके फल नहीं खाऊँगा तो और लोग खाएँगे। इसके नीचे बैठ कर लोग आराम करेंगे।

जब तक यह फलता रहेगा, लोगों को फल

मिलेंगे। फल खाकर लोग खुश होंगे।

सूखने पर इसकी टहनियाँ जलाने के काम आएँगी। बाकी लकड़ी से मेज-कुर्सियाँ बनेंगी। क्या यह मेरी मेहनत का नतीजा नहीं होगा ?

यह सुन कर वह आदमी चला गया। चलते-चलते उसने सोचा––मैं भी आम का पेड़ लगाऊँगा। यह बहुत अच्छा काम है।

अभ्यास

१. तुम किन-किन फलों के नाम जानते हो, बताओ।
२. आम की लकड़ी किस काम आती है ?

पाठ सत्ताईस

तारे

कौन बता सकता है प्यारे,
आसमान में कितने तारे ?

चमचम चमक दिखाते तारे,
दमदम दमक दिखाते तारे ।

कितने अच्छे लगते तारे,
एक-एक से न्यारे तारे,
सबको लगते प्यारे तारे।
कितने उजले होते तारे
कितने छोटे-छोटे तारे।
रोज रात में आते तारे,
रोज सुबह छिप जाते तारे।
सारे जग से न्यारे तारे,
बच्चों के अति प्यारे तारे।
भूली राह दिखाते तारे,
सूरज से डर जाते तारे।

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो।

२. तारे तुम्हें किस समय दिखाई देते हैं ?

पाठ अट्ठाईस

पुलिस का सिपाही

एक दिन सुरेश अपने पिताजी के साथ बाजार गया। दोनों एक ताँगे में बैठे थे। ताँगा सड़क पर चल रहा था। चलते-चलते

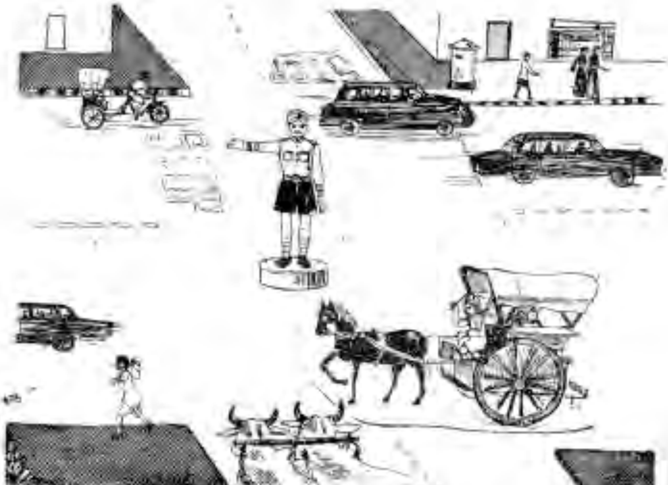

ताँगा एकाएक रुक गया। सुरेश ने पिताजी से पूछा—पिताजी! ताँगा क्यों रुक गया?

पिता—बेटा, पुलिस के सिपाही ने उसे रोक दिया है। वह देखो, उसने बाँह ऊपर उठा रखी है। यह इधर से जाने वालों को और सामने से आने वालों को रुके रहने का इशारा है।

सुरेश—वह ऐसा क्यों करता है ?

पिता—सिपाही चौराहे पर खड़ा है। चार सड़कें यहाँ मिलती हैं। चारों सड़कों से मोटर, ताँगे, बसें, साइकिल, ठेले आते-जाते हैं। यह सिपाही आमने-सामने का रास्ता रोक लेता है। फिर दो सड़कों की सवारियों को आने-जाने देता है। जब वे निकल जाती हैं, तब दूसरे आमने-सामने के रास्ते को चला देता है। नहीं तो बहुत-सी सवारियाँ टकरा जाएँ। देखो, अब उसने हमारे जाने का रास्ता खोल दिया है। अब हमारा ताँगा निकल जाएगा। इस बीच दूसरे रास्ते की सवारियाँ रुकी रहेंगी।

सुरेश—पिताजी, पुलिस के सिपाही और क्या करते हैं ?

पिता—पुलिस के सिपाही रात को पहरा देते हैं। कहीं कोई झगड़ा हो जाए तो उसको रोकते हैं। मेलों, जलसों और जुलूसों में भीड़ होती है। भीड़-भाड़ में बच्चे बिछुड़ जाते हैं। पुलिस के सिपाही उन्हें उनके माता-पिता तक पहुँचाते हैं। जो लोग रास्ता भूल जाते हैं, उनको रास्ता बतलाते हैं।

सुरेश—पिताजी, उस दिन रामलीला में भी पुलिस के कई सिपाही थे।

पिता—पुलिस का सिपाही, दिन हो या रात, गर्मी हो या बरसात, अपना काम करता रहता है। वह लोगों की सेवा करता है। वह लोगों की सहायता करता है।

अभ्यास

१. पुलिस का सिपाही क्या-क्या काम करता है ?

२. नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो—

(क) सिपाही·····पर खड़ा है।

(ख) रात को·····पहरा देते हैं।

(ग) वह लोगों की·····करता है।

पाठ उन्तीस

काम करो

विजय ने जूते पहने, बस्ता उठाया और पढ़ने चला। रास्ते में उसका मन बदल गया। उसने सोचा—मैं आज पाठशाला नहीं जाऊँगा। इधर-उधर घूमूँगा। बाग की सैर करूँगा। खूब खेलूँगा। शाम को घर लौटूँगा।

वह बाग में गया। फूलों की क्यारियों के पास टहलने लगा। वहाँ रंग-बिरंगी तितलियाँ थीं। तरह-तरह के फूल थे। फूलों से सुगन्ध आ रही थी।

विजय अकेला था। उसे कोई साथी चाहिए। बातचीत के लिए, खेल-कूद के लिए, उसे साथी चाहिए। उसने तितली से कहा—

तितली रानी, तितली रानी !
मुझे सुनाओ कोई कहानी ।

तितली ने कहा—मैं तुम्हारी तरह बेकार नहीं हूँ। मुझे फूलों का रस इकट्ठा करना है। मुझे बहुत काम करना है ।

तितली अपने काम में लगी रही । विजय घूमता रहा, घूमता रहा । उसे एक चिड़िया मिली । चिड़िया के मुँह में तिनका था । विजय ने चिड़िया से कहा—

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी !
मुझे सुनाओ कोई कहानी ।

चिड़िया बोली—मैं तुम्हारी तरह बेकार नहीं हूँ । मुझे अपना घोंसला बनाना है । मुझे बहुत काम है ।

चिड़िया चली गई। विजय इधर-उधर घूमता रहा। उसे बाग के माली का कुत्ता मिला। कुत्ते का नाम टोनी था। विजय ने कहा—

प्यारे टोनी, प्यारे टोनी !
आओ खेलें आँख-मिचौनी।

टोनी बोला — मैं तुम्हारी तरह बेकार नहीं हूँ। मुझे बाग की रखवाली करनी है। मुझे माली के घर की रखवाली करनी है। मुझे बहुत काम है।

टोनी भी चला गया। शाम हो गई थी। पाठशाला की भी छुट्टी हो गई थी। विजय घर लौट आया। वह बहुत उदास था। माँ ने विजय को देखा। माँ ने पूछा—क्या हुआ विजय ? तू उदास क्यों है ?

विजय—माँ !

माँ ! कह कर विजय चुप रह गया। वह चुपचाप खड़ा रहा।

माँ ने फिर पूछा—क्या बात है ? क्या किसी से झगड़ा हुआ है ?

विजय—माँ ! मैंने बड़ी भूल की है। आज मैं पाठशाला नहीं गया। बेकार बाग में घूमता रहा। मैंने बड़ा बुरा किया। अब कभी ऐसा नहीं करूँगा।

माँ—तू अच्छा बेटा है। तू राजा बेटा है। पढ़ने-लिखने से जी नहीं चुराना चाहिए। तूने अपनी भूल को जान लिया। अब कभी ऐसी भूल मत करना।

अभ्यास

१. इस कहानी से क्या सीख मिलती है ?

२. तितली, चिड़िया और टोनी ने विजय से क्या कहा ?

३. इन वाक्यों को पूरा करो—

(क) मैं तुम्हारी तरह ⋯ नहीं हूँ।

(ख) तूने अपनी ⋯ जान लिया।

पाठ तीस

हँसू अपार

चाहे सूर्य पूर्व से निकले,
चाहे पश्चिम के मैदान।

चाहे चाँद चाँदनी देता,
करे अँधेरा दान।

चाहे गर्मी हो या सर्दी,
चाहे हो काली बरसात।
चाहे बिजली चमक रही हो,
चाहे दिन हो चाहे रात।
चाहे नभ में बादल गरजें,
चाहे ओलों की बौछार।
चाहे दुख हो, चाहे सुख हो,
सभी दशा में हँसूँ अपार।

अभ्यास

१. दिशाएँ कितनी हैं ? नाम बताओ।
२. इस कविता को याद करो।
३. नभ, दशा, अपार इन शब्दों के अर्थ बताओ।

पाठ इकत्तीस

डाकघर

पिताजी—अशोक, तुम पाठशाला जा रहे हो न ? यह लो एक लिफाफा। रास्ते में चौराहे के पास एक ओर लैटर बक्स है। जानते हो लैटर बक्स क्या होता है ? बेटे ! वह जो लाल रंग का गोल-सा डिब्बा होता है न ! उसी को

लैटर बक्स कहते हैं। तो यह लिफाफा उस लैटर बक्स में डाल देना। समझे? भूलना मत।

अशोक—आपने यह लिफाफा किसे लिखा है?

पिताजी—तुम्हारे मामाजी को।

अशोक—पिताजी, यह लिफाफा लैटर बक्स में डाल देने से मामाजी को कैसे मिलेगा?

पिताजी—बेटा, डाकघर का आदमी आकर लैटर बक्स से चिट्ठियाँ निकाल ले जाएगा। फिर डाकखाने में इन्हें छाँटा जाएगा। अलग-अलग शहर की चिट्ठियाँ अलग-अलग थैलों में बन्द की जाएँगी। फिर उन थैलों को मोटर में रख कर स्टेशन पर ले जाएँगे। वहाँ से अलग-अलग रेल गाड़ियों पर लाद कर वे थैले अलग-अलग शहरों में भेज दिए जाएँगे।

फिर थैले उस शहर के डाकखाने जाएँगे। वहाँ पर फिर मुहल्लों के अनुसार चिट्ठियाँ

छाँट ली जाएंगी। अब डाकिया अपने इलाके की चिट्ठियाँ लेकर घर-घर बाँट आएगा।

डाकघर वाले कई और काम भी करते हैं। उनके बारे में तुम्हें फिर कभी बताऊंगा।

अभ्यास

१. हमें चिट्ठियां कौन दे जाता है?

२. कार्ड और लिफाफे का मूल्य बताओ।

३. चिट्ठी एक शहर से दूसरे शहर में कैसे पहुंचती है?

४. लैटर बक्स का रंग कैसा होता है?

पाठ बत्तीस

एक पत्र

चण्डीगढ़
२ मई, १९६०

प्रिय जगदीश भाई,

नमस्ते !

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी परीक्षा समाप्त

हो गई है। मेरे सभी पर्चे अच्छे हुए हैं। १० मई को नतीजा निकलेगा। गर्मी की छुट्टियाँ १५ जुलाई से हो रही हैं। छुट्टियों में मैं पिताजी के साथ आगरा आऊँगा। आगरा आते समय हम दो दिन मथुरा रुकेंगे। मथुरा और वृन्दावन देखेंगे।

मामाजी और मामीजी को मेरी ओर से नमस्ते कहना। मुन्नी को प्यार।

तुम्हारा भाई,
विजय

सेवा में
श्री जगदीशप्रसाद
३४५६, मोती कटरा
आगरा (उ० प्र०)

अभ्यास

१. अपने घर का पता स्लेट पर लिखो।

पाठ तैंतीस

हमारा गीत

सच बोलेंगे, नहीं डरेंगे ।
सदा समय पर काम करेंगे ॥

चित्त लगा कर खूब पढ़ेंगे ।
पढ़-लिख कर गुणवान बनेंगे ॥

अच्छे-अच्छे काम करेंगे ।
दुःखी जनों का दुःख हरेंगे ॥

खेल समय खेलेंगे भाई ।
नहीं करेंगे कभी लड़ाई ॥

अभ्यास

१. इस कविता को मिल कर गाओ ।
२. कोई अच्छा काम बताओ ।
३. तुम्हारा खेलने का समय कौनसा है ?

पाठ चौंतीस

दिशाएँ

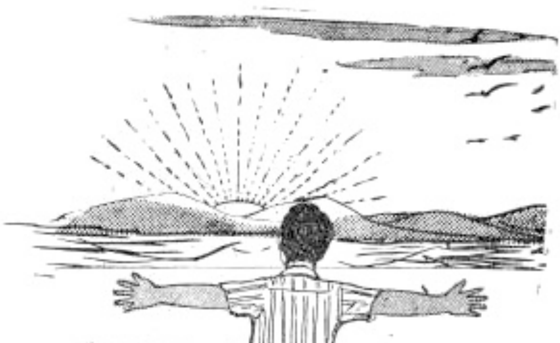

अध्यापक—विजय, दिशाएँ कितनी हैं ?

विजय—चार ।

अध्यापक—विमला, चार दिशाएँ कौन-कौनसी हैं ?

विमला—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण।

अध्यापक—ठीक है। कौनसी दिशा किस ओर होती है, यह जानने का एक बड़ा आसान तरीका है।

जिस ओर से सूरज निकलता है, उस ओर मुँह करके खड़े हो जाओ। फिर अपनी दोनों बाँहें फैला दो। तुम्हारे मुँह के सामने पूर्व दिशा होगी। पीठ की ओर पश्चिम। तुम्हारे बाएँ हाथ की ओर उत्तर दिशा होगी और दाएँ हाथ की ओर दक्षिण।

अभ्यास

१. दिशाएँ कितनी हैं और कौन-कौन-सी ?

२. सूरज किस दिशा में निकलता है ?

३. दिशाएँ जानने का क्या तरीका है ?

पाठ पैंतीस

बच्चों का पार्क

आओ बच्चो, आज तुम्हें बच्चों के पार्क की सैर कराएँ। वह सामने बच्चों का पार्क है।

देखो, फाटक पर लिखा है—बच्चों का पार्क। इसमें केवल बच्चे ही खेल सकते हैं।

बच्चों के पार्क में खेलने का बहुत सामान है। देखो वह झूला है। उस पर बैठ कर झूलते हैं। एक चरखी होती है। उसके चारों ओर जंजीरें लटकती रहती हैं। जंजीरों को पकड़ कर चक्कर में झूलते हैं। ऊपर एक चरखी होती है। वह चरखी घूमती है। सब बच्चे भी घूमते हैं। खूब हँसते हैं। बड़ा आनन्द आता है।

इधर देखो। इस खेल को शूट कहते हैं। पीछे की सीढ़ियों से बच्चे बारी-बारी से ऊपर चढ़ते हैं। वहाँ से बारी-बारी से फिसलते हैं। फिसलने में बड़ा मजा आता है।

पार्क में एक सी-सा नाम का भी खेल होता है। इस खेल में तख्ते के एक सिरे पर एक बच्चा बैठ जाता है। दूसरे सिरे पर दूसरा बच्चा। पहला बच्चा अपने पैर से हलका-सा धक्का लगाता है तो वह सिरा ऊपर उठ जाता है।

दूसरा सिरा नीचा हो जाता है। इस तरह बारी- बारी से उछलते रहते हैं।

बच्चों के पार्क में खेलते समय इन बातों का ध्यान रखो––

सबको बारी-बारी से खेलना चाहिए। खेलते समय अपने से छोटों को पहले खेलने दो। अपनी बारी आने तक धक्का-मुक्की कभी नहीं करनी चाहिए। खेलते समय यदि किसी के चोट लग जाए तो पहले उसका खयाल करो। उसकी सहायता करो।

अभ्यास

१. बच्चों के पार्क में खेलने के लिए क्या-क्या है ?
२. खेलते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
३. खेलते समय किसी को चोट लग जाए तो क्या करना चाहिए ?

चिड़िया घर

पाठ छत्तीस

चिड़ियाघर की सैर

विजय के मामा दिल्ली में रहते हैं। विजय एक बार दिल्ली गया। विजय के मामा

ने कहा—चलो, विजय, आज तुम्हें चिड़िया-घर ले चलें। चिड़ियाघर नई दिल्ली में पुराने

किले के पास है। भीतर जाने के लिए टिकट लेना पड़ता है। बच्चों का टिकट दस नए पैसे है। कतार में खड़े होकर टिकट ले लो। टिकट मिल गए। अब इन सीढ़ियों से उतर चलो।

और विजय सुनो, चिड़ियाघर के पशु-पक्षियों को कुछ खाने को मत देना। सभी पशु-पक्षियों को चिड़ियाघर में काम करने वाले उनकी पसंद का खाना ठीक समय पर खिलाते हैं। बाहर की चीजें खाने से वे बीमार हो जाते हैं।

यहाँ कई तरह के तोते हैं। सफेद, पीले गुलाबी और हरे। हरे तोते तो यहीं मिल जाते हैं। सफेद, पीले और गुलाबी बाहर से आते हैं। आगे बगुले और सारस हैं। विजय, सारस की लम्बी चोंच व लम्बी टांगें तो देखो। इधर बत्तखों के पास ही रंग-बिरंगी चिड़ियाँ कितना शोर मचा रही हैं। यहाँ कबूतर भी हैं। अरे उधर देखो—काले, सफेद और रंगीन कबूतर

किस तरह बैठे गुटर-गूँ गुटर-गूँ कर रहे हैं।

अच्छा विजय, क्या तुम इस पक्षी का नाम बता सकते हो ?

इसे बाज कहते हैं। यह बहुत तेज उड़ता है। इसके पंजों के नाखून बहुत तेज और नुकीले होते हैं। यह बहुत-से पक्षियों को पकड़ कर खा जाता है। वहाँ देखो, पंख फैला कर मोर नाच रहा है। मोर पक्षियों में सबसे सुन्दर पक्षी है। मोर का रंग पीला, नीला और सुनहरी होता है। मोर सफेद भी होता है।

उस तरफ लंगूर कैसी उछल-कूद मचा रहे हैं। कभी नीचे उतरते हैं। कभी ऊपर चढ़ते हैं। कभी पेड़ की टहनी से झूलते हैं। इनकी पूँछ तो देखो। कितनी लम्बी है !

आओ, अब दूसरी तरफ चलें। ये रीछ और भालू हैं। इनके काले-काले बाल कितने लम्बे हैं। उधर सूअर अपने बच्चों के साथ-

साथ धरती खोद रहा है। अरे, यह आवाज तो सुनो। यह शेर की दहाड़ है। वह जो सामने सींखचों का बाड़ा दिखाई दे रहा है, उसी में शेर बन्द है। यह शेर बब्बर है। इसको जंगल का राजा कहते हैं। इधर के बाड़े में चीते हैं।

अब तुम्हें हाथी की सवारी कराएँगे। हाथी की सवारी करने के लिए अलग टिकट लेना पड़ता है। हाथी बड़ा समझदार जानवर है। लाइन में खड़े होकर टिकट ले लो। आज बहुत भीड़ है। हाथी की सवारी करने वालों की भी लाइन लगी हुई है। वह देखो, हाथी जितनी ऊँची पक्की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। सवारी करने वाले सीढ़ियों पर चढ़ जाते हैं। महावत हाथी को सीढ़ियों के पास लाकर खड़ा कर देता है। हाथी की पीठ पर लकड़ी का हौदा कसा है। इसमें पाँच-छः आदमी बैठ सकते हैं।

अरे विजय, तुम सवारी करने से डरते हो?

इसमें डरने की बात नहीं है। बैठो, बैठो। यह अभी तुम्हें घुमा कर वापस आ जाएगा।

लो चिड़ियाघर की सैर तो हो गई। अब कुछ फल खा-पी लो। आओ, छाया में हरी-हरी घास पर बैठ कर खाएँगे। फलों का थैला लाओ। ये छिलके यहाँ मत फेंकना। छिलके कूड़ा डालने की जगह पर डालना।

चलो, अब वापस चलें। चिड़ियाघर बन्द होने का समय हो रहा है।

अभ्यास

१. पक्षियों के राजा का नाम बताओ और जंगल के राजा का नाम बताओ।
२. तुम जिन पक्षियों के नाम जानते हो, उनकी सूची बनाओ।
३. पालतू पक्षियों के नाम बताओ।

पाठ सैंतीस

भारत देश हमारा प्यारा

भारत देश हमारा प्यारा ।
है दुनिया से न्यारा ॥
नदियाँ और पहाड़ यहाँ हैं,
बड़े-बड़े मैदान यहाँ हैं,

सूरज तारे चाँद यहाँ हैं,
पतझड़ और बहार यहाँ हैं।
है सबकी आँखों का तारा।
भारत देश हमारा प्यारा॥
पुत्र-पुत्रियाँ हम भारत के,
नर-नारी सब मिल भारत के,
इसकी शान बढ़ाएँगे हम,
इसका मान बढ़ाएँगे हम।
हमने सब कुछ इस पर वारा।
भारत देश हमारा प्यारा॥

अभ्यास

१. हमारे देश का क्या नाम है ?
२. इस कविता को याद करो।
३. दिल्ली के पास कौनसी नदी बहती है ?

पाठ अड़तीस

हम इनसे सीखें !

तुमने कई बार चींटियों को दीवार पर चढ़ते-उतरते देखा होगा । घर में कहीं कोई मीठी चीज पड़ी हो, तो चींटियाँ कतार बाँधे आ पहुँचती हैं । अपने बिल में वापस जाते समय भी कतार बाँध कर जाती हैं ।

कतार बना कर काम करने में आसानी रहती है । धक्का-मुक्की नहीं होती । बारी आने

पर सबका काम हो जाता है। किसी को कोई शिकायत नहीं होती।

चींटियों से हम एक और बात भी सीख सकते हैं। वह यह कि कोई कठिन काम आ पड़े, तो उसे मिल-जुल कर करना। यदि किसी चींटी को कोई भारी चीज मिल जाती है और वह अकेली उसे नहीं उठा पाती, तो वह बिल में जाकर दूसरी चींटियों को बताती है। बस, फिर क्या है। बहुत-सी चींटियाँ आकर जोर लगाती हैं। चीज को उठा कर ले जाती हैं।

अभ्यास

१. चींटियों से तुम क्या सीख सकते हो ?

२. कतार बनाने से क्या लाभ होता है ?

पाठ उन्नतालीस

तोता

हरे रंग का है यह तोता ।
जाने कब जगता कब सोता ।

चोंच लाल है और नुकीली ।
आँखें हैं इसकी चमकीली ।
भीगे चने चाव से खाता ।
मिरच देख कर चोंच बढ़ाता ।
पहले यह टें-टें करता था ।
सबको देख बहुत डरता था ।
विमला ने जब इसे सिखाया ।
'राम राम' कहना तब आया ।
नहीं किसी से अब डरता है ।
'राम राम' सबसे करता है ।

अभ्यास

१. तोता किस रंग का होता है ?
२. तोते की चोंच किस रंग की होती है ?
३. विमला ने तोते को क्या सिखाया ?

पाठ चालीस

आदमी, चीता और लोमड़ी

एक आदमी एक बैल

एक चीता एक लोमड़ी

(सड़क के किनारे पिंजरे में चीता बन्द है। एक आदमी सड़क पर जा रहा है। वह पिंजरे को देख कर रुक जाता है और चीते को देखने लगता है।)

चीता—आह! बड़ी प्यास लग रही है। कोई मुझे इस पिंजरे से निकाल देता!

आदमी—बात क्या है? तुम्हें लोगों ने इस तरह पिंजरे में बन्द क्यों कर रखा है?

चीता—सचमुच, मुझे कुछ पता नहीं। मैंने तो किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं।

आदमी—अच्छा! पर मैं तुम्हें कैसे

निकालूँ ? तुम अभी मुझे झपट कर मार न डालोगे ?

चीता—भाई विश्वास करो, मैं ऐसा नीच नहीं हूँ। ओह ! बड़ी प्यास लगी है। गला सूख गया है। तुम मुझ पर इतनी दया भी नहीं दिखा सकते ? जरा-सी देर के लिए मुझे बाहर जाने दो।

आदमी—अच्छी बात है। तुम ईमानदार मालूम देते हो। मुझसे तुम्हारी यह हालत नहीं देखी जाती।

(वह पिंजरे के पास गया और दरवाजा खोल दिया। चीता बाहर निकला और उछल कर आदमी पर झपटा। उसे नीचे गिरा दिया और ऊपर चढ़ बैठा।)

चीता—अरे मूर्ख ! मुझे बड़ी भूख लगी है। मैं अभी तुम्हें खाऊँगा।

आदमी—आह ! भगवान् के लिए अपने

पंजे मेरे कंधों पर मत रखो। मुझे बड़ा डर लग रहा है। तुमने तो अयदा किया था कि तुम मुझे नहीं खाओगे। मैंने तुम्हें पिंजरे से बाहर निकाल दिया है। मेरे उपकार का क्या यही बदला है ?

चीता—बड़े मूर्ख हो तुम। तुम समझते थे एक कि चीता अपने वायदे को पूरा करेगा ? (खिलखिला कर हँसता है)

(एक बैल आता है)

आदमी—बैल भाई, तुम्हीं बताओ, यह कहाँ की भलमनसाहत है कि मैंने तो तरस खाकर इस चीते को पिंजरे से बाहर निकाल दिया और यह मुझे फाड़ खाने के लिए तैयार है।

चीता—(बैल की ओर ऐसे लाल-लाल आँखें करके देखता है, जैसे अभी उछल कर उसके ऊपर हमला कर देगा) ओ बैल, जरा

सोच-समझ कर बात करना।

बैल—(घबरा कर) मैं कमजोर और बूढ़ा हूँ। मुझ पर मेहरबानी रखना। यह आदमी जाने और तुम जानो। मैं तुम्हारे झगड़े में नहीं पड़ता। मेरे विचार में तुम्हें इस आदमी को खाने का पूरा-पूरा हक है।

(बैल चला जाता है)

चीता—सुन ली तुमने बैल की बात ! अब तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें जरूर खाऊँगा, जरूर खाऊँगा।

आदमी—नहीं भाई नहीं। अभी नहीं। अभी तो केवल बैल से ही पूछा है। एक और किसी से भी पूछ लेना चाहिए।

चीता—अच्छी बात है। पर एक बात सुन लो। अगर उसने भी तुम्हें खा डालने की बात कही तो मैं उसी समय तुम्हें फाड़ खाऊँगा। मैं तीन दिन का भूखा हूँ।

(इतने में एक लोमड़ी आती है)

आदमी—देखो लोमड़ी, मैंने इस चीते को पिंजरे से बाहर निकाला और इसने बाहर निकलते ही मुझे दबोच लिया। क्या तुम समझती हो कि इसे ऐसा ही करना चाहिए था ? क्या यही मेरे उपकार का बदला है ?

लोमड़ी—कैसा पिंजरा ? पिंजरा कहाँ है ?

आदमी—वह सामने वाला पिंजरा । यह चीता इसमें बन्द था। मैंने पिंजरे का दरवाजा खोल कर इसे बाहर निकाला।

लोमड़ी—(हैरानी से) यह कैसे हो सकता है ? इस छोटे से पिंजरे में इतना बड़ा चीता कैसे आ सकता है ? यह मैं नहीं मान सकती।

चीता—ठहरो, मैं तुम्हें अभी दिखाता हूँ। (पिंजरे में घुस जाता है)

लोमड़ी—अच्छा, यह बात थी। दरवाजा कहाँ से बन्द था ? मुझे सब कुछ करके

दिखाओ।

आदमी—(दरवाजा बन्द करता है) ऐसे दरवाजा बन्द था।

लोमड़ी—(हँसती है) अब मैं सारी बात समझ गई। मेरे विचार में चीते को इस पिंजरे में ही रहना चाहिए। अब यह राह चलते लोगों को तंग नहीं कर सकेगा। (आदमी से) तुम्हें अब कोई खतरा नहीं है। बाद में कभी ऐसी गलती मत करना। अच्छा भाई, राम-राम! (चीते की ओर देख कर, जो कि दाँतों से सींखचों को तोड़ना चाह रहा है) मालिक, राम-राम!

अभ्यास

१. आदमी ने चीते को पिंजरे में से क्यों निकाला ?

२. चीते ने बाहर आकर क्या किया ?

३. लोमड़ी ने फिर चीते को कैसे पिंजरे में बन्द कर लिया ?

पाठ इकतालीस

सात वारों के नाम

आज सोमवार है। विजय खुशी-खुशी पाठशाला जाने की तैयारी कर रहा है। विमला भी अपना बस्ता संभाल रही है। दोनों भाई-बहन एक ही पाठशाला में पढ़ते हैं।

कल रविवार था। पाठशाला में छुट्टी थी। विजय और विमला माता-पिता के साथ बाज़ार गए थे। दोनों अपने लिए कहानियों भी पुस्तकें और खिलौने लाए हैं।

विजय आज जल्दी ही पाठशाला पहुंच जाएगा। आज उसकी कक्षा के कमरे की सफाई करने की बारी है। सभी लड़के बारी-बारी कक्षा के कमरे की सफाई करते हैं। कल मंगलवार होगा। मंगलवार को कक्षा का कमरा विमला साफ करेगी। बुधवार को दोनों भाई-बहन पाठशाला की फूलों की क्यारियों को सींचेंगे। उनकी बारी होगी। उससे अगले दिन वीरवार होगा। वीरवार को अध्यापक जी सारी कक्षा के बच्चों की सफाई को देखते हैं। वे देखते हैं कि किसी के कपड़े तो मैले नहीं हैं। नाखून कटे हुए हैं कि नहीं। और बस्ता भी साफ होना

चाहिये। पाठशाला के सभी बच्चे साफ-सुथरे रहते हैं।

शुक्रवार को बाल-सभा में भाग लेने वाले बच्चों को बता दिया जाता है। कौन-सा बच्चा गीत गाएगा। कौन-सा कहानी सुनाएगा। कौन-सा चुटकुले।

शुक्रवार से अगले दिन शनिवार होता है। शनिवार को बाल-सभा होती है। फिर रविवार आता है। रविवार को पाठशाला बन्द रहती है।

अभ्यास

१. सात वार कौन-कौन से हैं ? अपनी कापी में लिखो।
२. तुम्हें छुट्टी किस वार को होती है ?
३. रविवार से पहले कौन-सा वार होता है और बाद में कौन-सा ?

पाठ बयालीस

बाल-सभा

आज शनिवार है। आधी छुट्टी के बाद बाल-सभा होगी। सारी कक्षाओं के बालक एक साथ पाठशाला में बैठेंगे।

गीत गाए जाएंगे। कोई कहानी सुनाएगा। कोई चुटकुले। पहेलियाँ पूछी जाएंगी।

वीणा बहुत अच्छा गाती है। नाचती भी है।

सुभाष कहानी बहुत अच्छी सुनाता है। उसकी कहानियों से हमें सीख मिलती है। कभी वह हँसाने वाली कहानी सुनाता है। हमें खूब हँसी आती है। उसका कहानी सुनाने का ढंग बड़ा बढ़िया है। क्योंकि वह अभिनय के साथ कहानी सुनाता है।

कहानी में गुस्से की बात आती है, तो

गुस्से में बोलता है। हँसने की आती है तो हँसता है। जैसी कहानी की बात, वैसा ही उसका बोलने का ढंग।

अध्यापक जी कह रहे थे—सुभाष बड़ा हो कर बहुत अच्छा बोलने वाला बनेगा।

विनोद चुटकुले सुनाता है। उसके चुटकुले

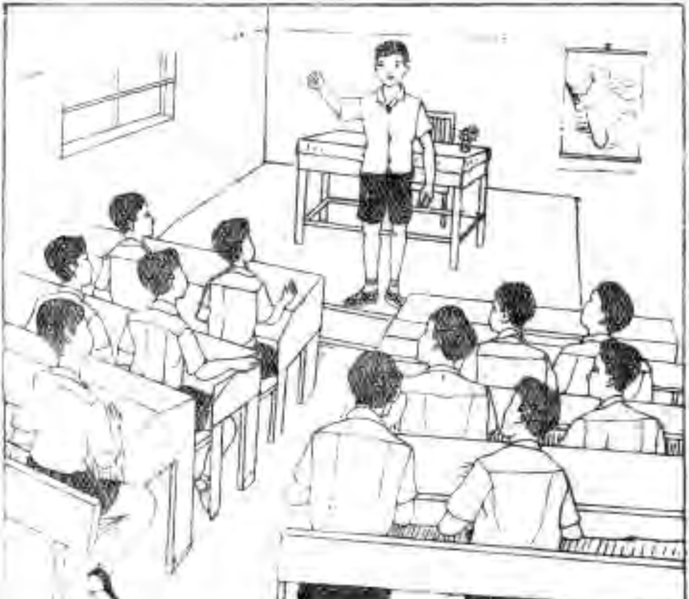

सुनकर खूब हँसी आती है। पर वह स्वयं नहीं हँसता। दूसरों को हँसाता है।

पहेलियाँ बूझने में मुझे बड़ा मज़ा आता है। मैं बहुत जल्दी पहेलियाँ बूझ लेता हूँ।

पिछली बार बाल-सभा के दिन एक नाटक खेला गया था। यह नाटक हमारे हिन्दी के अध्यापक जी ने तैयार किया था

नाटक में मेरा काम सबसे अच्छा रहा। मुझे इनाम में 'बच्चों के नाटक' पुस्तक मिली।

अध्यापक जी कह रहे थे—दसहरे के

दिनों में पाठशाला में लव-कुश का नाटक होगा। उस नाटक में, मैं लव बनूँगा।

मुझे बाल-सभा बहुत अच्छी लगती है। पहले खड़े होकर बोलने में बड़ी झिझक होती थी। अब वह झिझक दूर हो गई है। इससे बोल-चाल का ढंग आता है। अच्छी-अच्छी बातें सुनने को मिलती हैं।

अभ्यास

१. वार कितने होते हैं ? नाम बताओ।

२. 'बाल-सभा' के बारे में अपने भाई को पत्र लिखो।

३. पुस्तकालय से 'लव-कुश' की पुस्तक लेकर पढ़ो।

४. 'बाल-सभा' से क्या लाभ होता है ?

५. हाव-भाव के साथ कहानी या कविता पढ़ने का अभ्यास करो।